।। अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति,श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565–224600,224900

ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

नक्सलवाद के समाधान का अनूठा प्रयोग
समर्थ लोगों के प्रदर्शन ने पैदा किया नक्सलवाद – आचार्य महाप्रज्ञ

–अंकित सेठिया (मीडिया सहसंयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 17 फरवरी : एक ओर देश के विभिन्न इलाकों मे बढ़ती नक्सलवादी घटनाओं के कारण राजनीतिक हल के में चिंता की लकीरे साफ नजर आ रही है और इसके समाधान की कवायद लगाई जा रही है वहीं इस नक्सलवाद के समाधान के रुप मे अहिंसा प्रशिक्षण रुपी कार्यक्रम को प्रस्तुत करने वाले राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ ने आज कस्बे के उपरले तेरापंथ भवन मे जनसमुदाय के बीच समर्थ लोगों के प्रदर्शन को प्रतिक्रियात्मक हिंसा और नक्सलवाद को पैदा करने वाला करार दिया है। आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी 9 वर्षीय अहिंसा यात्रा के दौरान नक्सलवाद बहुल इलाकों में पहुंचकर न केवल इसके पैदा होने वाले कारणों का पता लगाया बल्कि इसके समाधान के लिए देश के 353 जगहों पर अहिंसा प्रशिक्षण के केन्दों का शुभारंभ भी किया। इन केन्द्रों पर गरीब एवं बेरोजगारों को अहिंसात्मक रोजगार का प्रशिक्षण देकर स्वयं के पैरों पर खड़ा किया जाता है। इसके साथ ही इन केन्द्रों पर अहिंसा का सैद्धांतिक ज्ञान एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण देकर लोगों के आतंक, अपराध और हिंसा के भावों में परिष्कार भी कराया जाता है। इन केन्द्रों में हजारों महिला, पुरुषों ने प्रशिक्षण प्राप्त कर आत्मनिर्भर बन चुके हैं और वे खुद ऐसे केन्द्रों के संचालन में अपनी शक्ति का नियोजन करने लग जाते हैं। प्रशिक्षण केन्द्रों में सिलाई, रंगाई, बुनाई एवं गृहउद्योगों के साथ कम्प्यूटर का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने प्राचीन सार्थवाह की पद्धति का उल्लेख करते हुए कहा कि पुराने समय में समर्थ लोगों के द्वारा असमर्थों का सहयोग किया जाता था, परन्तु आज इस पद्धति को भूला दिया गया है। इस कारण समर्थ लोगों के द्वारा किया गया प्रदर्शन गरीब और भूखमरी से आक्रांत लोगों में प्रतिक्रियात्मक हिंसा पैदा कर रहा है और उन्हे नक्सलवाद की ओर धकेल रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ ने कल्याण मंदिर स्त्रोत्र में छिपे रहस्यों को उजागर करते हुए कहा कि आतंकवाद, नक्सलवाद जैसी देश के लिए खतरा बनने वाली हिंसक गतिविधियों को काबू में करना है तो पुंजीपतियों को प्राचीन सार्थवाह की पद्धति को भूलाना नहीं चाहिए। उन्होने कहा कि मोक्ष को प्राप्त करने के लिए भगवान् पार्श्व जैसे महान मार्गदृष्टा की जरुरत होती है वैसे ही समाज की व्यवस्था को संचालित करने के लिए सार्थवाह की पद्धति महत्वपूर्ण है। इससे पूर्व युवाचार्य महाश्रमण ने गीता और उत्तराध्ययन पर प्रवचन में आसूरी वृति को उजागर करने में अहंकार, क्रोध, छलना, अशुभ योग को कारणभूत बताया।

अंकित सेठिया
मीडिया संयोजक/सहसंयोजक